Shiv Chalisa

शिवचालीसा

DOHA · दोहा

1 जै गणेश गिरिजासुवन, मङ्गल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देव अभय बरदान॥

CHAUPAI · चौपाई

1 जै गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत संतन प्रतिपाला॥

2 भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुंडल नाग फनीके॥

3 अंग गौर शिर गंग बहाये। मुण्डमाल तन छार लगाये॥

4 वस्त्र खाल बाघम्बर सोहैं। छबिको देख नाग मुनि मोहैं॥

5 मैंना मातुकि हवे दुलारी। बाम अंग सोहत छबि न्यारी॥

6 कर त्रिशूल सोहत छबि भारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी॥

7 नन्दिगणेश सोहैं तहँ कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे॥

8 कार्तिक श्याम और गणराऊ। या छबिको कहि जात न काऊ॥

9 देवन जबहीं जाय पुकारा। तबहीं दुख प्रभु आप निवारा॥

10 किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी॥

11 तुरत षड़ानन आप पठायउ। लवनिमेष महँ मारि गिरायउ॥

12 आप जलंधर असुर सँघारा। सुयश तुम्हार बिदित संसारा॥

13 त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपाकर लीन बचाई॥

14 किया तपहिं भागीरथ भारी। पुरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी॥

15 दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं। सेवक अस्तुति करत सदाही॥

16 वेद नाममहिमा तव गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई॥

17 प्रगटि उदधिमंथन ते ज्वाला। जरे सुरासुर भये विहाला॥

18 कीन्ह दया तहँ करी सहाई। नीलकण्ठ तब नाम कहाई॥

19 पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा। जीतके लंक विभीषण दीन्हा॥

20 सहस कमलमें हो रहधारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी॥

21 एक कमल प्रभु राखेउ गोई। कमल नैन पूजन चह सोई॥

22 कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिए इच्छित वर॥

23 जय जय जय अनंत अविनासी। करत कृपा सबके घटवासी॥

24 दुष्ट सकल नित मोहिं सतावै। भ्रमत रहे मोहिं चैन न आवै॥

25 त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारों। यहि अवसर मोहिं आन उबारो॥

26 लै त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकटसे मोहि आनि उबारो॥

27 मातपिता भ्राता सब कोई। संकटमें पूछत नहिं कोई॥

28 स्वामि एक है आस तुम्हारी। आय हरहु अब संकट भारी॥

29 धन निरधनको देत सदाहीं। जो कोई जाँचे वा फल पाहीं॥

30 अस्तुति केहि बिधि करौं तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी॥

31 शंकर हो संकटके नाशन। विघ्न विनाशन मंगल कारन॥

32 योगी यति मुनि ध्यान लगावैं। शारद नारद शीश नवावैं॥

33 नमो नमो जै नमो शिवाय। सुरब्रह्मादिक पार न पाय॥

34 जो यह पाठ करै मन लाई। तापर होत हैं शंभु सहाई॥

35 ऋनियाँ जो कोइ हो अधिकारी। पाठ करै सो पावन हारी॥

36 पुत्र होन कर इच्छा कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥

37 पंडित त्रयोदसीको लावैं। ध्यान पूर्वक होम करावैं॥

38 त्रयोदशी ब्रत करै हमेशा। तन नहि ताके रहे कलेशा॥

39 धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै। शंकर सन्मुख पाठ सुनावै॥

40 जन्म-जन्म के पाप नसावै। अन्तबास शिवपुर में पावै॥

41 कहे अयोध्या आस तुम्हारी। जानि सकल दुख हरहु हमारी॥

DOHA · दोहा

2 नित्त नेम करि प्रातही, पाठ करो चालीस।
तुम मेरी मन कामना, पूर्ण करहु जगदीश॥

3 मगसर छठि हेमंत ऋतु, सम्बत चौंसठ आन।
अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन कल्यान॥

Text checked against: Gita Press, Gorakhpur: Shiv Aradhna (code 2127), 'शिवचालीसा २'. Meanings, audio and all scripts at nityapaath.com/shiv-chalisa/